2 क्षुधार्त रंतिदेव ने दिया करस्थ थाल भी,
तथा दधीचि ने दिया परार्थ अस्थिजाल भी।
उशीनर क्षितीश ने स्वमांस दान भी किया,
सहर्ष वीर कर्ण ने शरीर –चर्म भी दिया।
अनित्य देह के लिए अनादि जीव क्या डरे ?
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे॥

संदर्भ–

प्रस्तुत उद्धरण राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त प्रणीत 'मनुष्यता 'कविता से अवतरित है।

प्रसंग–

प्रस्तुत कविता में कवि परोपकार के लिए जीने वाले व्यक्ति को ही मनुष्य बताते हुए मनुष्यता और परोपकार को पर्याय बताता है।

भावार्थ–

कवि ने अपने कथन की पुष्टि में विभिन्न महापुरुषों के उदाहरण देते हुए कहा है कि दूसरे की भूख शांत करने के लिए स्वयं भूख से व्याकुल रंतिदेव ने अपने हाथ का भोजन का थाल भी दे दिया था। दधीचि ने तो परोपकार के लिए अपनी हड्डियों का भी दान दे दिया था।उशीनर देश के राजा अर्थात् शिवि ने तो पक्षी की रक्षा करने के लिए अपना मांस तक दान कर दिया था।वीर कर्ण ने तो अपने शरीर की खाल तक दान कर दी थी।इस नश्वर शरीर की रक्षा के लिए अमर मनुष्यता को डरना नहीं चाहिए क्योंकि मनुष्य वही है जो दूसरे के लिए जीता है।

शिल्प सौंदर्य–

- दृष्टांत अलंकार है।
- सरल परिमार्जित खड़ी बोली है।
- गुण प्रसाद है।